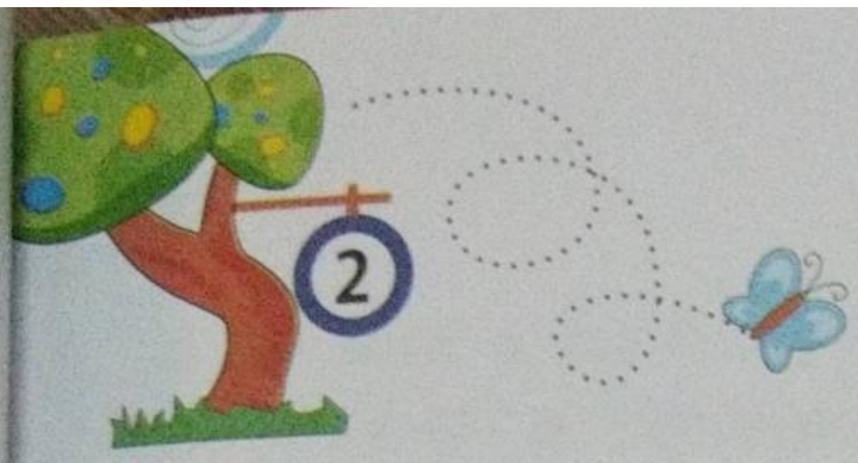

वर्ण-विचार
(Orthography)

वर्ण

भाषा की व्यवहार में आ सकने वाली लघुतम इकाई वाक्य है। प्रत्येक वाक्य के स्वाभाविक खंड शब्द होते हैं। प्रत्येक शब्द के खंड करने पर जो इकाई (ध्वनि) प्राप्त होती है उसे वर्ण कहते हैं। जैसे–

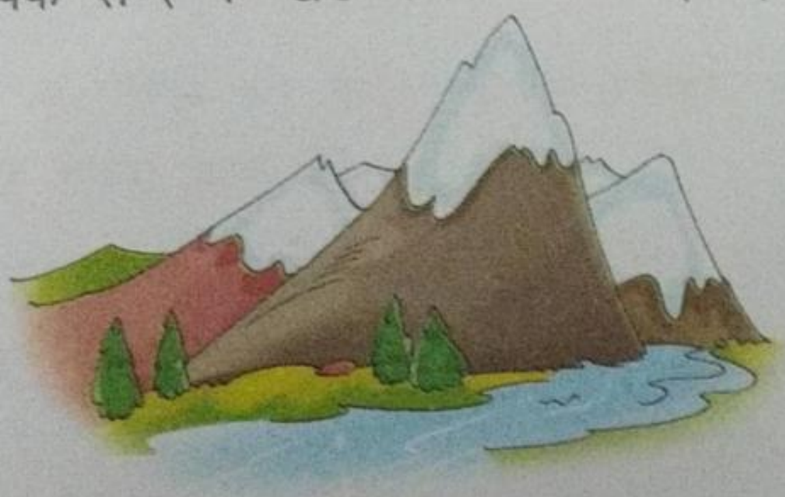

पर्वत– प्+अ+र्+व्+अ+त्+अ

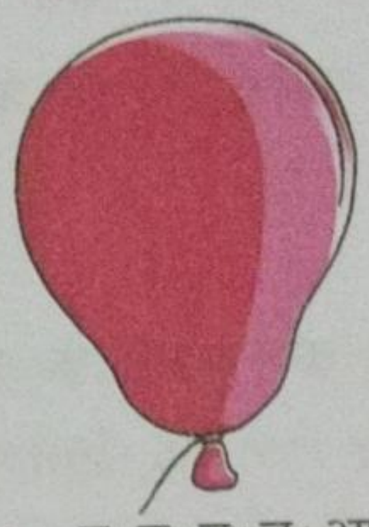

गुब्बारा– ग्+उ+ब्+ब्+आ+र्+आ

भाषा की वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

वर्णमाला

वर्णमाला शब्द 'वर्ण' और 'माला' शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है– वर्णों का समूह। इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है। हिंदी वर्णमाला में प्रयुक्त होने वाले वर्ण निम्नलिखित हैं–

हिंदी भाषा में कुल 52 वर्ण हैं, जिसकी सहायता से अनेक शब्दों का निर्माण होता है।

वर्णों की संख्या

स्वर:-	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ	–	11
व्यंजन:-	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	(कवर्ग)	
	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	(चवर्ग)	
	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	(टवर्ग)	
	त्, थ्, द्, ध्, न्	(तवर्ग)	
	प्, फ्, ब्, भ्, म्	(पवर्ग)	
	य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह	–	33
अयोगवाह:-	अं, अः	–	02
अन्य:-	ड़्, ढ़्	–	02
संयुक्त व्यंजन:-	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	–	04
		कुल वर्ण –	52

Scanned by TapScanner

वर्णों के भेद

हिंदी भाषा के वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है–

1. स्वर 2. व्यंजन

1. **स्वर–** जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय श्वांस वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर आ है और बिना किसी अन्य वर्ण या ध्वनि के उनका उच्चारण किया जाता है, उन्हें स्वर क जाता है।

हिंदी भाषा में **ग्यारह** स्वर होते हैं–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के भेद

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों के **तीन** भेद होते हैं–

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

1. **ह्रस्व स्वर–** जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं। इनकी संख्या चार है– **अ, इ, उ, ऋ**। इन्हें **मूल स्वर** भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर–** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं इनकी संख्या सात है– **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।**
3. **प्लुत स्वर–** प्लुत स्वर कोई अलग से स्वर नहीं हैं। किंतु जब किसी स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना या अधिक समय लगे, तो उसे **प्लुत स्वर** कहते हैं। प्लतु स्वर को स्पष्ट करने के लिए स्वर के आगे ३ लिखा जाता है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत भाषा में ही किया जाता है। जैसे– ओ३म आदि।

स्वरों की मात्राएँ

स्वरों को दो रूपों में लिखा जाता है–

1. मूल रूप में 2. मात्रा के रूप में

1. **मूल रूप में–** स्वरों को उनके मूल रूप में लिखा जाता है। जैसे– **अनार, आइए, उठाओ, ऊपर** आदि। इन शब्दों में **अ, आ, इ, उ, ऊ, ए** तथा **ओ** स्वर अपने मूल रूप में लिखे गए हैं।
2. **मात्रा के रूप में–** स्वरों को उनकी मात्राओं के रूप में भी लिखा जाता है। जैसे– भाभी, योगेश आदि। किंतु यह बात ध्यान रखने योग्य है कि स्वरों को मात्राओं के रूप में उस समय ही लिखा जाता है जबकि उनका प्रयोग व्यंजनों के साथ किया जाए।

स्वरों की मात्राएँ निम्न प्रकार होती हैं–

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	कोई मात्रा नहीं	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

Scanned by TapScanner

विशेष

1. अ सभी व्यंजनों में होता है। 'अ' रहित व्यंजनों को हलंत (्) लगाकर लिखा जाता है। खड़ी पाई (।) वाले व्यंजनों को 'अ' रहित लिखने पर उनकी पाई को हटा दिया जाता है।

   जैसे– छ - छ्, ट - ट्, ठ - ठ् आदि।
   ख - ख्, घ - घ्, म - म् आदि।

2. उ तथा ऊ की मात्राएँ प्रायः व्यंजनों के नीचे लगाई जाती हैं, किंतु र के साथ मध्य में लगाई जाती है। जैसे– रुपया, रूप आदि।

3. ऋ की मात्रा का प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ ही होता है। इसका उच्चारण रि की तरह किया जाता है।

4. श् के साथ ऋ की मात्रा जोड़ने पर श्रृ बनता है।

2. **व्यंजन**– जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वांस वायु किसी उच्चारण-अवयव (कंठ, तालु, नासिका, जिह्वा आदि) से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। हिंदी भाषा में कुल 39 व्यंजन हैं। ये निम्नलिखित हैं–

स्पर्श व्यंजन–	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	(कवर्ग) – 05
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	(चवर्ग) – 05
	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(टवर्ग) – 05
	त्	थ्	द्	ध्	न्	(तवर्ग) – 05
	प्	फ्	ब्	भ्	म्	(पवर्ग) – 05
अंत:स्थ व्यंजन –	य्	र्	ल्	व्		– 04
ऊष्म व्यंजन –	श्	ष्	स्	ह्		– 04
संयुक्त व्यंजन –	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		– 04
अन्य –	ड़	ढ़				– 02
						कुल व्यंजन – 39

अयोगवाह

हिंदी वर्णमाला में ग्यारह स्वर तथा तैंतीस व्यंजनों के अलावा दो वर्ण और भी हैं– अं तथा अः। ये न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। इन दोनों वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। इसलिए ये स्वर नहीं है तथा इनका उच्चारण स्वरों के बाद ही संभव होता है। अतः ये व्यंजन भी नहीं हैं। ये दोनों ध्वनियाँ (अं तथा अः) अयोगवाह कहलाती हैं।

ऑ ध्वनि

वर्तमान समय में हिंदी भाषा पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव भी देखा जा सकता है। इसके प्रभाव के कारण ही ऑ ध्वनि का प्रयोग भी हिंदी भाषा में किया जाता है। इस ध्वनि का प्रयोग हिंदी भाषा में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के लिए ही किया जाता है। जैसे– डॉक्टर, बॉल, ऑफिस, कॉलेज आदि।

Scanned by TapScanner

अनुस्वार और अनुनासिक

हिंदी भाषा में मिलती-जुलती सी प्रतीत होने वाली दो ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं, जिन्हें अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) कहा जाता है, किंतु ये दोनों ध्वनियाँ भिन्न-भिन्न हैं। अनुस्वार (ं) एक व्यंजन है। प्रत्येक वर्ग के पंचम् वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न् और म्) के स्थान पर भी अनुस्वार का प्रयोग होता है। इसका उच्चारण नाक से किया जाता है। अनुनासिक (ँ) का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से किया जाता है। जैसे-

अनुस्वार (ं)	अनुनासिक (ँ)
हंस, कंस, दंत	हँस, ताँबा, दाँत,
कंठ, पंच, अंत	दसवाँ, पाँच, आँत

विसर्ग

विसर्ग का उच्चारण ह् के समान होता है। इसका प्रयोग संस्कृत के मूल शब्दों के साथ ही होता है। जैसे- प्रातः, अतः, स्वतः, प्रायः आदि।

व्यंजनों के भेद

व्यंजनों के तीन भेद होते हैं–

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंत:स्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन– जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वांस वायु कंठ, ओष्ठ (होंठ), जिह्वा, तालु आदि को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 (क् से लेकर म् तक) है।
2. अंत:स्थ व्यंजन– इनकी संख्या केवल चार है– य्, र्, ल्, व्।
3. ऊष्म व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय श्वांस वायु मुख में तीव्र गति से रगड़ खाने के कारण ऊष्मा पैदा करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है– श्, ष्, स्, ह्।

प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के भेद

प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं–

1. अल्पप्राण
2. महाप्राण

1. अल्पप्राण– जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम श्वांस (वायु) का प्रयोग होता है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण तथा य्, र्, ल्, व् वर्ण होते हैं।
2. महाप्राण– जिन व्यंजनों के उच्चारण में अधिक श्वांस (वायु) का प्रयोग होता है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह् वर्ण होते हैं।

Scanned by TapScanner

तालिका

अल्पप्राण	महाप्राण
कवर्ग– क्, ग्, ङ्	कवर्ग– ख्, घ्
चवर्ग– च्, ज्, ञ्	चवर्ग– छ्, झ्
टवर्ग– ट्, ड्, ण्	टवर्ग– ठ्, ढ्
तवर्ग– त्, द्, न्	तवर्ग– थ्, ध्
पवर्ग– प्, ब्, म्	पवर्ग– फ्, भ्
अन्य– य्, र्, ल्, व्	अन्य– श्, ष्, स्, ह्

प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद

प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं–

1. अघोष 2. सघोष

1. अघोष– जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय स्वर-तंत्रिका में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा तथा श्, ष्, स् वर्ण होते हैं।
2. सघोष– जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय स्वर-तंत्रिका में कंपन होता है, उन्हें सघोष व्यंजन कहते हैं। इसमें प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ तथा य्, र्, ल्, व्, ह् व्यंजन होते हैं।

तालिका

अघोष	सघोष
कवर्ग– क्, ख्	कवर्ग– ग्, घ्, ङ्
चवर्ग– च्, छ्	चवर्ग– ज्, झ्, ञ्
टवर्ग– ट्, ठ्	टवर्ग– ड्, ढ्, ण्
तवर्ग– त्, थ्	तवर्ग– द्, ध्, न्
पवर्ग– प्, फ्	पवर्ग– ब्, भ्, म्
अन्य– श्, ष्, स्	अन्य– य्, र्, ल्, व्, ह्

वर्णों का उच्चारण स्थान

जब किसी वर्ण का उच्चारण किया जाता है, तो श्वांस (वायु) फेफड़ों से निकलकर श्वांस-नलिका से होता हुआ बाहर की ओर आता है। उस समय जहाँ श्वांस को रोका जाता है, उस स्थान को उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है। जैसे–

Scanned by TapScanner